हिमाचल में नाटी परम्परा

Dr. Mritunjay Sharma
Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

आज के युग में मानव भावनात्मक रूप से दूर होता जा रहा है और ऐसा प्रतीत होता है कि नैतिकता आदि की भावना से दूर होकर वह एक यांत्रिक जीव बनता जा रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी संस्कृति के चिरंजीवी तत्त्वों से जुड़े रहें क्योंकि समाज का वास्तविक विकास तभी होता है जब वह अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखता है। देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध हिमाचल प्रदेश की संस्कृति देव–संस्कृति कही जाती है। यह संस्कृति अपने लोकगीतों, नृत्यों, गाथाओं आदि के माध्यम से सुरक्षित रही है।

लोक संगीत वह संगीत है जो सर्वसाधारण जनमानस में प्रचलित होता है। जीवन के सरल तथा सुगम प्रवाह का नाम ही लोक है। संगीत में गायन, वादन तथा नृत्य का समावेश रहता है अर्थात स्वर, लय तथा भाव। अन्य अर्थ में स्वर शब्द (साहित्य), वादन (वाद्य), नृत्य (लययुक्त भंगिमाएं)। लोक मानस की किसी भी अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए संगीत का आश्रय ही लोक संगीत कहलाता है। जो संगीत सर्वधारण द्वारा ग्रहण किया जाता है वही लोक संगीत बन जाता है।

हिमाचल का लोक संगीत उतना ही प्राचीन है जितना कि यहाँ का लोक जीवन। लोकसंगीत ही शास्त्रीय संगीत का आधार रहा है। लोकगीतों द्वारा ही शास्त्रीय संगीत पोषित हुआ है। वैदिक काल में आर्चिक, गाथिक, सामिक अर्थात एक, दो तथा तीन स्वरों में गान होता था। स्वरांतर में चार स्वरों से युक्त गान होता था। धीरे–धीर से गान सात स्वरों तक होने लगा परन्तु लोक गीतों में तीन चार स्वरों में ही गायन होता है। यह परम्परा आज भी जीवित है। यह इस बात का प्रमाण है कि लोक गीत अति प्राचीन परम्परा से चले आ रहे हैं। आज ऐसे भी लोक गीत है जिनमें अधिक संख्या में स्वरों का प्रयोग होता है परन्तु तीन चार स्वर युक्त गीत ही लोक गीतों की परम्परा को जीवित रखने का माध्यम हैं।

वैदिक काल में नृत्य एक समृद्ध परम्परा का रूप ले चुका था। विभिन्न पर्वो उत्सवों आदि में नृत्य किये जाते थे। नृत्य का संबंध शिव–गौरी से जोडा जाता है। शिव ने नृत्य के ताडंव तथा गौरी ने लास्य अंग को उत्पन्न किया। हम ऐसा भी कह सकते हैं कि मानव ने अपने भावों की अभिव्यक्ति शरीर की विभिन्न मुद्राओं से करनी आरम्भ की जो समय के साथ परिष्कृत होकर नृत्य में परिवर्तित हुई। साधारण जनमानस से प्रचलित नृत्य ही लोक नृत्य हैं जिसके माध्यम से मानव अपनी खुशी,

दुःख, उत्साह आदि को प्रकट करता है। यह लोक नृत्य ही नियमों में बंधकर शास्त्रीय नृत्य की संज्ञा प्राप्त करते हैं।

नाटी

हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत में अनेक विभिन्नताएं देखने को मिलती हैं। यह विभिन्नताएं हिमाचल की भौगोलिक स्थिति, दुर्गम क्षेत्रों, बोली की विभिन्नताओं आदि के कारण होती हैं। हिमाचल के अलग–अलग भागों में अनेक लोक गीत तथा लोक नृत्य प्रचलित हैं। यह लोक गीत, नृत्य हिमाचल को एक अलग पहचान दिलाते हैं। हिमाचल प्रदेश की प्रमुख लोक संगीत की शैली नाटी है। नाटी एक लोक ताल का नाम है। इस ताल में गाई जाने वाले रचनाएं जो आंचलिक भाषा में हों, नाटी कहलाती हैं। नाटी पर्वतीय लोगों की सांस्कृतिक निधि है, यह परम्परागत रूप से लोगों द्वारा सुरक्षित रखी गई है। नाटी हिमाचल प्रदेश के जिला शिमला, सिरमौर, कुल्लू, मंडी (करसोग, चिच्योट), किन्नौर में प्रचलित है। हिमाचल के निचले क्षेत्रों में नाटी का प्रचार नही है। नाटी के अंतर्गत गायन, वादन, तथा नृत्य तीनों आते हैं। हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित 'नाटी' शैली के मूल भाव एक से हैं परन्तु भौगोलिक स्थिति तथा भाषा (बोली) की विविधता के कारण इस शैली में थोड़ा–थोड़ा अंतर पाया जाता है।

रचना की दृष्टि से कल्पना का स्थान सबसे ऊपर है। कल्पना के माध्यम से ही कलाकार को नूतन सृजन की शक्ति मिलती है। कल्पना एक ऐसी शक्ति है, जिसके द्वारा हम अप्रत्यक्ष वस्तुओं के बिम्बों को प्रत्यक्ष करते है तथा इन्हें संयोजित, परिवर्तित, परिवर्द्धित करते हुए एक कलात्मक रूप देते हैं। नाटी गायन विधा भी है और नृत्य विधा भी। गायन विधा में नाटी गीतों में क्षेत्र विशेष की बोली का प्रभाव स्पष्ट झलकता है। क्षेत्र विशेष के लोक शब्दों का प्रयोग तथा कल्पना शक्ति के प्रयोग से गीतकार, शब्दों को छंद–बद्व करता है और नाटी गीत का उदय होता है। इस गीत को लय, ताल, स्वर बद्व कर नाटी गायन किया जाता है। नाटी गीतों में अधिकतर तीन–चार स्वरों का प्रयोग होता है। नाटी गायन में तीनों स्वर सप्तकों का प्रयोग कम ही सुनने को मिलता है। गीतों की धुन, स्थाई तथा अंतरों में एक सी भी होती है तथा अलग–अलग भी।

गीतों की रचनाएं एक दूसरे से भिन्न रहती हैं। हर एक की अपनी अलग पहचान होती है। मींड, कण, ठहराव, स्वरों के लगाव, काकु प्रयोग आदि से गायक नाटी गीतों में विविधता भर देते हैं। 'लामण' से अधिकतर नाटी गायन आरम्भ होता है।

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE

नाटी नृत्य के अनेक रूप हिमाचल प्रदेश में प्रचलित हैं। अधिकतर, नृत्य ही नाटी का मुख्य रूप माना जाता है, जिसके साथ गायन तथा वादन का समावेष रहता है। हिमाचल प्रदेश के नाटी प्रधान क्षेत्रों में नाटी–नृत्य के कई प्रकार प्रचलित हैं। इन नाटी–नृत्यों के नाम या तो क्षेत्र के नाम से हैं जैसे कुल्लवी, किन्नौरी, या ताल के नाम से जैसे ढीली नाटी, मुजरा या फिर नृत्य शैली के

परिवर्तन से जैसे दोहरी नाटी, टिणकी नाटी आदि। नाटी नृत्य में स्त्रीयॉ तथ पुरुष समान रूप से भाग लेते हैं परन्तु कभी–कभी स्त्रीयॉ अलग तथा पुरुष अलग नृत्य करते हैं। नाटी नृत्य करने वाले एक दूसरे का हाथ पकड़कर, कदम से कदम मिलाकर, लय, ताल में एक वृत्त में घूमते हैं। यह नृत्य पंक्तिबद्ध भी किया जाता है। नाटी नृत्य को योजनाबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। नाटी नृत्य में नर्तक पारम्परिंक वेशभूषा पहनते हैं। इस पारम्परिंक वेशभूषा में क्षेत्र अनुसार परिवर्तन देखने को मिलता है।

नाटी में अनेक वाद्यों का प्रचलन है। यह वाद्य अधिकतर स्थानीय परम्परागत कलाकारों द्वारा तैयार किए जाते हैं। वाद्यों में ढोल, ढोलक, ढोलकी, नगाड़ा, हुड़क, दामनू, थाली, शहनाई, बंशी, करनाल, रणसिंहा, वीन, खंजरी आदि का प्रयोग होता है। वाद्यों पर ही नाटी ताल को विभिन्न लयों में बजाया जाता है। शहनाई पर नाटी गीत धुन की संगति की जाती है। करनाल, रणसिंहा बीच–बीच में विचित्रता लाने के लिए प्रयुक्त होते हैं। इनमें दो स्तरों की ही उत्पत्ति होती है। नाटी गायन में नाटी ताल का ही प्रयोग होता है जो अपनी लय के कारण अलग–अलग नामों से जाना जाता है। तावली, मुजरा, ढीली, या बारह मात्राए सोलह मात्रा आदि। वादक नाटी बजाते समय टुकड़ों, तिहाइयों आदि का भरपूर तथा सौंदर्यात्मक प्रयोग करते हैं।

नाटी के प्रकार

विभिन्न क्षेत्रों में नाटी के कई प्रकार देखने को मिलते हैं जैसे माला नाटी, रासा, फूकी नाटी, ढीली नाटी, घुघती नाटी, छुट्टी नाटी, तावली नाटी, टिणकी, दोहरी, फेटी, बुशहरी, जांहूजंग, उथडी, कायङ, सुकेती, कुल्लवी, सिराजी, बघाटी, आदि नाटी के अनेक प्रकार प्रचलित हैं। ध्यान से दृष्टिपात करने से पता चलता है कि इन नाटियों में ताल पक्ष लगभग एक सा है। वही ताल विलम्बित लप में, मध्य लप में तथा द्रुतलय में अलग–अलग प्रकारों तथा नामों से जाना जाता है। नृत्य शैली में भी अंतर आता है जो क्षेत्र विशेष के अनुसार बदलता है। कई नाटी के प्रकार जगह विशेष के नामों से संबंधित हैं। जैसे कुल्लवी नाटी, सुकेती नाटी, सिरमौरी नाटी।

नाटी के उदाहरण

1. गोली दागी न कनेरुंए लाए
   दिता आंखे दा चीरा कुणीए लाया जियो दा बुरा
   मुजरा नाटी, शृंगार रस प्रधान, 8 मात्रा
2. फूली करो फूलटू–फूलटू, फूलो बांठियां पलाशों,
   बांका मुलका हिमाचला तेरी चोटी ऊपर कैलाशो
   ढीली नाटी, 12 मात्रा, हिमाचल महिमा

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE

3. भावारुपिए हो किदेले चाले मेरी भावारुपिए

4 मात्रा, ढीली नाटी, विलम्बित, माला नृत्य

4. ढोले जा मेरे बोलो टोलआ दीशो साजणों रा नां गांव रे

16 मात्रा, विरह गीत, गायन के लिए

5. मेरे नी शाउरे रे जाणा बापुआ मेरे नी शाउरे जाणा
तां पोडी शाउरे जाणा बेटीए

ढीली नाटी, विरह, 4 मात्रा

6. कौतुऐ रा खोजो रे माएना रातेरा हॉडणा छोडे देणा रे

8 मात्रा तावली नाटी, श्रृंगार रस

7. पाला रे केघिए भीजा बिंदिए तेरे आगुआ पाला रे

4 मात्रा, तावली, द्रुत, श्रृंगार रस, (शरारत)

नाटी की विशेषताएं

- नाटी का उद्देश्य सामूहिक मनोरंजन है।
- यह एक परम्परागत शैली है परन्तु समयानुसार इसमें बदलाव आते रहते हैं।
- विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित नाटी के मूल भाव एक से रहते हैं।
- नाटी में अलग से दर्षकों की आवश्यकता नहीं होती।
- नाटी के नियम लचीले होते हैं जो परिवर्तित होते रहते हैं।
- नाटी के नियम इस प्रकार बनाए जाते हैं जिससे आनंद में बाधा न पहुँचे।
- कई–कई घंटों तक नाटी गाने, नाचने के बाद भी उत्साह में कमी नहीं आती तथा थकावट की झलक तक नहीं दिखती।
- बोली में परिवर्तन, भौगोलिक परिस्थिति आदि के कारण नाटी को अलग–अलग नामों से जाना जाता है जैसे कुल्लू में इसे कुल्लवी नाटी रामपुर बुशैहर में बुशैहरी नाटी सिरमौर में सिरमौरी नाटी आदि।
- नाटी गीतों में आंचलिक गीतों की प्रमुखता रहती है।
- नाटी गीतों की विषय वस्तु श्रम, देवी–देवता, प्रेम, सामाजिक घटनाएं आदि होती है।
- नाटी गीतों की भाषा थोड़ी–थोड़ी दूरी पर बदलती रहती है।
- नाटी गीत परम्परा से चले आते हैं परन्तु समय के साथ–साथ नए गीत बनते रहते हैं तथा पुराने गीत लुप्त होते जाते हैं।
- नाटी गीतों के गीतकार का नाम अज्ञात ही रहता है।
- इन गीतों के संगीतकार का नाम भी अज्ञात रहता है।
- अधिकतर गीतों का लेखक ही संगीतकार होता है।

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE

- नाटी गीतों में सामूहिकता का समावेश अधिक रहता है।
- गीतों में पुनरावृत्ति अधिक रहती है।
- नाटी के गीत मौखिक परम्परा से आगे बढ़ते हैं।
- नाटी के गीतों से विभिन्न भावों तथा रसों की अभिव्यक्ति होती है।
- नाटी गीत हास्य, वियोग, श्रृंगार, करुण, वीर रस आदि से ओत–प्रोत होते हैं।
- नाटी गीतों में बहुत कम गीत ही ऐसे होते हैं जिनमें पूरा गीत एक ही विषय पर जुड़ा रहता है।
- नाटी गीतों में पहाड़ी शब्द भंडार की भरमार रहती है।
- कई गीत केवल नृत्य के लिए ही बनते हैं जिनमें तुक बंदी अधिक होती है।
- नाटी नृत्य सामूहिक होता है।
- नृत्य में पुरुष तथा स्त्रियॉं समान रूप से भाग लेती हैं।
- नाटी नृत्य में सादगी का भाव अधिक रहता है।
- नाटी नृत्य के नर्तक स्वयं ही दर्शक, नर्तक तथा मार्गदर्शक होते हैं।
- नाटी नृत्य एक भावपूर्ण गतिशील नृत्य है।
- नाटी ताल प्रधान शैली है।
- नाटी में लोक वादक स्वरों को लय के साथ प्रस्तुत करते हैं।
- नाटी नृत्य में सबसे आगे वाले नर्तक को सभी नर्तक अपना आदर्श मानते हैं।
- मुद्रा परिवर्तन, कदम आदि का दायित्व प्रमुख नर्तक पर निर्भर होता है।
- नृत्य एक योजनाबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।
- क्रमबद्ध योजना में लय की बढ़त करना नाटी की अपनी निजि विशेषता है।
- नाटी विलम्बित, मध्य तथा द्रुत तीनों तालों में होती है।
- नाटी गीत अधिकतर तीन या चार स्वरों में होते हैं।
- नाटी नर्तकों की संख्या निश्चित नहीं होती है।
- नाटी नृत्य नाचते समय नर्तक बीच में नृत्य छोड़कर जा भी सकते हैं तथा नृत्य में शामिल भी हो सकते हैं।
- नाटी नृत्य में शरीर के अंगों का तालमेल ताल, लय के साथ बहुत ही सुंदरता से किया जाता है।
- ताल तथा लय के साथ विभिन्न मुद्राओं का प्रस्तुतीकरण होता है।
- नाटी नृत्य में कदमों को विशेष क्रम से रखा जाता है जो ताल तथा लय को अनुसार अलग–अलग होते हैं।

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE

- नाटी नृत्य में हाथों को विशेष ढंग घुमाया जाता है जो ताल तथा लय को अनुसार होता है।
- नाटी के लिए किसी विशेष मंच की आवश्यकता नहीं होती।
- नाटी नृत्य का कोई अलग से नृत्य–निर्देशक नहीं होता।
- क्षेत्र के अनुसार नाटी नृत्यों में परिवर्तन देखने को मिलता है।
- नाटी नृत्यों में लास्य अंग की व्यापकता है।
- नाटी में विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों का प्रयोग होता है।
- वाद्यों में ढोल, नगाड़ा, ढोलक, ढोलकी, हुड़क, दमानू, थाली, खंजरी, शहनाई, बांसुरी, वंशी, करनाल, रणसिहा, बीन आदि का प्रयोग होता है।
- ताल वाद्यों पर बजने वाली नाटी ताल की लय ही नाटी को अलग–अलग नामों का रूप प्रदान करती है।
- वादकों द्वारा बजाई गई ताल तथा लय नाटी से विभिन्न भावों तथा रसों की उत्पत्ति का कारण होती है।
- नाटी अधिकतर उत्सवों आदि अर्थात् प्रसन्नता के वातावरण में की जाती है न कि ग़म के वातावरण में।
- नाटी में बजाई जाने वाली तालों के वादक परम्परा से शिक्षित होते हैं।
- नाटी की तालों के कई प्रकार ऐसे हैं जिन्हें केवल परम्परागत वादक ही बजा पाते हैं सामान्य रूप से ये सुनने को नहीं मिलते।
- नाटी में प्रयुक्त होने वाले वाद्यों को अधिकतर लोक कलाकारों द्वारा ही तैयार किया जाता है।
- नाटी नृत्य में पहनी जाने वाली वेशभूषा पारम्परिक होती है।
- नाटी प्रचलित क्षेत्रों में पहनी जाने वाली वेशभूषा में अंतर देखने को मिलता है।
- पुरुष नाटी नृत्य के समय सिर पर टोपी पहनते हैं। यह टोपी साधारण होती है तथा कुछ पर ऋृतु अनुसार फूल या पंख आदि लगे होते हैं।
- टोपी की सजावट देखकर ही पता चल जाता है कि नृत्य अमुख क्षेत्र का है।
- पुरुष शरीर पर जो वस्त्र पहनते है वह अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग होते है। जैसे सदरी, लोईया, गाची, कुर्ता, सूत्थण।
- स्त्रीयां नाटी के अवसर पर सिर पर धाटू पहनती है।
- स्त्रीयां लौंग, टीका, मुरकी, चांक, तिल्ली, नथ आदि क्षेत्रानुसार पहनती है।
- वस्त्रों में स्त्रीयां चोली, पाटू, सदरी, रेज़टा, कोट आदि पहनती हैं।
- बाजूबंद, हंसली, चुडी, हार, अरसी, आदि आभूषण स्त्रीयां पहनती हैं।

नाटी मनोरंजन का साधन तो है पर अगर हम इसके गंभीर रूप को देखें तो हम पाएंगे कि इस विधा ने हमारे समाज पर धनात्मक प्रभाव डाले हैं तथा ऋणात्मक प्रभाव को दूर करने का प्रयास किया है। नाटी के माध्यम से आपसी भाई–चारे, मेल–मिलाप में वृद्धि होती है क्योंकि सभी लोग इसमें शामिल होते हैं। छोटी–मोटी समस्याएं तथा झगड़े तो नाटी की ताल तथा नृत्य में ही समाप्त हो जाते हैं। स्त्री पुरुष में समानता का अधिकार देने में इस लोक शैली से अधिक प्रयास किसने किया होगा? नाटी में सभी स्त्री पुरुष एक साथ नाचते हैं, गाते हैं। जब लोक जीवन, जो समाज का मूलाधार है, उसी में यह समानता है तो सभी क्षेत्रों में अपने आप आ जाएगी ऐसा सोचना गलत न होगा।

नशे तथा अन्य कुरीतियों से नाटी गीत सामान्य जन को दूर रहने का संदेश देते हैं। भविष्य में आज का मानस क्या देखता है, उसे कैसा चाहता है, यह कल्पना भी इन नाटी गीतों में होती है। देश भक्ति जागृति करना नाटी की विशेषता है। नाटी से सामान्य तनाव दूर हो जाता है। यह शैली नृत्य के माध्यम से जनमानस के शरीर में स्फूर्ति तथा नई ऊर्जा का संचार कर देती है। नाटी ने अनेक लोगों को अपनी आजीविका कमाने का अवसर दिया है। इसे गाकर, बजाकर, नाचकर कई लोग अपना जीवन यापन भी कर रहे हैं।

आधुनिक परिप्रेक्ष में नाटी

हिमाचल प्रदेश की गौरवमयी संस्कृति का एक प्रमुख भाग नाटी है। यह हिमाचल के लोक संगीत की प्रतिनिधि है। आधुनिक समय में भौतिकवाद, समय के आभाव आदि कारणों से नाटी अपना वास्तविक स्वरूप खोती जा रही है। आज टी.वी. कैसेट, सी.डी. आदि के माध्यम से इस शैली का पूरे भारत में प्रसार हो रहा है परन्तु क्या यह वही नाटी का लोक स्वरूप है जो ग्रामीण जन जीवन का अभिन्न अंग तथा देवभूमि की संस्कृति को दर्शाने वाला है?

आज का युवा रातों रात प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए उस शैली से खिलवाड़ कर रहा है, जिस शैली को हमारे प्रसिद्ध लोक कलाकारों ने वर्षों की साधना से सम्भाला तथा समृद्ध करने का प्रयास किया । युवा वर्ग आज नाटी गीतों में आंचलिक बोली जगह अंग्रेजी, पंजाबी आदि के शब्दों का प्रयोग कर रहा है ताकि उसकी प्रसिद्धि हो। नाटी की पारम्परिक ताल तथा उसके प्रकारों से भी छेड़छाड़ की जा रही है। विद्युत चालित संगीत उपकरणों जैसे सिंथीसाइजर, आक्टोपैड, गिटार आदि ने आज पारम्परिक लोक वाद्यों को पीछे छोड़ दिया है। पूर्ण रूप से पारम्परिक लोक वाद्यों का नाटी में वादन केवल किसी उत्सव आदि में ही सुनने को मिलता है। मंच पर तो यह वाद्य कभी कभार ही नज़र आते हैं।

नाटी के साथ बजने वाले पारम्परिक वाद्यों को बनाने वाले कर्मी भी नगण्य से रह गए हैं जो एक गंभीर विषय है। नाटी के गीतों की धुनों को तुरंत बनाने के उद्देश्य से किसी फिल्मी गीत आदि की धुन ले ली जाती है, जिस पर अर्ध पहाड़ी भाषा का प्रयोग कर गीत लिखा जाता है। यह गीत

नाटी की विशेषता यानी सरलता, सादगी से विहीन होते हैं। अच्छे लोकगीत लिखने के लिए क्षेत्र विशेष की भाषा (बोली) में प्रयुक्त शब्द भंडार की पूर्ण जानकारी होना आवश्यक है। जो आज के युवा वर्ग में शहरीकरण, समयाभाव तथा जानने की इच्छा न होने के कारण कम हो गई है।

यही बात नाटी नृत्य के साथ भी लागू होती है। धीरे–धीरे हम देख रहे है कि नाटी का स्वरूप आज से 30–40 साल पहले था वह बदलता जा रहा है। बदलाव तो लोकसंगीत का एक प्रमुख भाग है परन्तु क्या अपनी अमूल्य संस्कृति के साथ ऐसी छेड़छाड ठीक है? इस गंभीर समस्याओं के साथ ही यह कहना भी गलत न होगा कि ऐसे भी कलाकार है जो इस विधा से छेड़छाड़ करना एक अपराध मानते हैं। नाटी के स्वरूप को जीवित रखना ही उनका उद्देश्य है।

आज नाटी हिमाचल प्रदेश का प्रतिनिधि मानी जाती है परन्तु इस क्षेत्र में व्यापक शोध की आवश्यकता है। नाटी के प्रकारों के विषय में ही स्पष्ट नहीं है कि यह कितने हैं। कोई कहता है नाटी सात प्रकार से होती है कोई 10 या 15 प्रकार बताता है, जिसका कोई ठोस आधार नहीं है। ऐसी ही स्थिति नाटी मे प्रयुक्त ताल के साथ है। जब हम किसी वादक का साक्षात्कार करके उससे पूछते हैं कि अमुक ताल के बोल क्या हैं तो वह डा, कड़ कड़, नां, झां आदि कह कर आवर्तन पूरा करता है पर यही ताल दूसरा वादक अलग बोलों से बोलता है। वादकों को यह विद्या परम्परागत रूप से श्रव्य माध्यम से मिली है लिखित नहीं। कई तालें ऐसी हैं जिन्हें केवल परम्परागत वादक ही पूर्णतया वजा सकते हैं। ऐसे वादकों की संख्या गिनी चुनी ही है। अतः आज का शिक्षित वर्ग इन समृद्व नाटी तालों तथा उसक प्रकारों को शास्त्रीय संगीत की स्वरलिपि की भांति वर्णित कर सके तो यह हमारी संस्कृति को सुरक्षित रखने में मील का पत्थर होगा।

यही बात ताल की भांति स्वर वाद्यों जैसे शहनाई, जो नाटी का एक मुख्य वाद्य है, पर भी लागू होती है। युवा वर्ग आज शहनाई जैसे वाद्य को सीखने में शर्म महसूस करता है उसे तो गिटार सीखना है। शहनाई के बिना क्या नाटी के गौरवमयी स्वरूप की कल्पना की जा सकती है? पर इतनी मेहनत कौन करे ? पुराने नाटी के गीतों को, जो स्वर, ताल, लय छंद, भाव, रस के जीते जागते उदाहरण हैं, संरक्षित करने की आवश्यकता है। यहां यह कहना महत्वपूर्ण है कि इन पुराने गीतों को शास्त्रीय रागों में बांधा गया है। संगीतकारों या गीतकारों ने शास्त्रीय राग सीखे नहीं परन्तु वातावरण, परिस्थिति, भाव प्रधानता, समर्पण, विश्वास तथा देव कृपा से गीतों को रागों के शुद्व रूप में अनायास ही ढाला। इनकी धुनें दिल को छू देती हैं।

हिमाचली नाटी पर व्यापक तथा मौलिक शोध की आवश्यकता है जिससे यह विधा पाश्चात्य के तूफान के समक्ष हिमालय बनकर खडी हो और उसे आगे न बढने दे।